पाठ्यक्रम

नृत्य पेपर - 2

इकाई - I कथक की उत्पत्ति और इतिहास

1. कथक की प्राचीन जड़ें और इसके विकास में विभिन्न सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहलू।

2. मध्यकाल में कथक का विकास और कथक के विकास में शाही दरबारों और संरक्षण की भूमिका।

3. फारसी और इस्लामी परंपराओं से कथक में शामिल किए गए तत्व।

4. आधुनिक काल में कथक की प्रमुख विशेषताएँ।

5. कथक घरानों की अवधारणा।

इकाई - II समकालीन काल में कथक

1. स्वतंत्र भारत में कथक के प्रमुख गुरुओं, कलाकारों और महत्वपूर्ण संस्थानों का अवलोकन।

2. 20वीं सदी में कथक द्वारा अपनाए गए सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन।

3. अपनी पारंपरिक जड़ों को बनाए रखते हुए समकालीन कथक में शामिल किए गए नए विषयों और शैलियों का ज्ञान।

4. कथक पर अन्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूपों का प्रभाव।

5. नृत्य के विकास में संगीत नाटक अकादमी, भारतीय कला केंद्र, दूरदर्शन, संस्कृति मंत्रालय, आईसीसीआर और क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों का योगदान। संगीत और नृत्य के लिए भारत सरकार और विभिन्न अकादमियों द्वारा प्रदान किए गए कार्यों और वित्तीय सहायता योजनाओं का ज्ञान।

इकाई-III कथक के तकनीकी पहलू

1. कथक नृत्य के निम्नलिखित पदों का ज्ञान- तत्कार, थाट, आमद, परन, परन जूडी आमद, टुकड़ा, तोड़े, प्रेमलु, कविति, गत, गत भाव, फरमाइशी, कमली, तिहाई, नवहक्का, दुपल्ली, टिपल्ली, भ्रामरी, पढ़ंत, पलटा, गत पलटा, चाल, तांडव, लास्य, रेला, पेशकार।

2. ताल प्रकाश- ताल के दस प्राण, लयकारी-आधि, पौनी, आड़, कुआड़, बियाड आदि।

3. कथक में अभिनय के लिए प्रयुक्त विभिन्न गायन शैलियों की विशेषताएँ- 2 ठुमरी, आस्थापदी, ग़ज़ल, भजन, होरी, वंदना, कजरी, चैती आदि।

4. कथक संगत में प्रसिद्ध कलाकारों के नाम एवं योगदान।

5. नृत्य उपकरण-मंच, प्रकाश, ध्वनि, वेशभूषा, आभूषण और श्रृंगार।

इकाई-IV नृत्य का व्यावहारिक पहलू

1. नाट्यगृह एवं रंगमंडप-निर्माण, प्रकार एवं विभिन्न तत्व।
2. अवधारणाएँ जिनमें शामिल हैं- हस्त, पद, गति, चारीस, मंडल, करण और रेचक।
3. एकादश संग्रह- रस, भाव, अभिनय, धर्म, वृत्ति, प्रवृत्ति, सिद्धि, स्वर, आतोद्यम, गण और रंग।
4. नायक और नायिकाओं की अवधारणा।
5. उत्तरी भारत की भातखंडे और पलुस्कर ताल संकेतन प्रणाली का ज्ञान।

यूनिट-V शिक्षा, शिक्षणशास्त्र, अनुसंधान और वर्तमान ज्ञान।

1. नृत्य के संदर्भ में अनुसंधान की परिभाषा, इसकी आवश्यकता, अवसर और विभिन्न आयाम।
2. नृत्य शिक्षा में अनुसंधान, वर्तमान रुझान और भविष्य की दिशाएँ।
3. भारत में विश्वविद्यालयों के नृत्य कार्यक्रम का अवलोकन।
4. स्कूली शिक्षा के हिस्से के रूप में नृत्य।
5. भारतीय शास्त्रीय नृत्य के सीखने और अभ्यास को बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया की भूमिका।